UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 37 पंडित दीनदयाल उपाध्याय (महान व्यक्तिव)

पाठ का सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर, सन् 1916 को राजस्थान में जयपुर के धनकिया में हुआ था। जब ये ढाई वर्ष के थे तभी इनके पिता भगवती प्रसाद का देहांत हो गया। जब ये सात वर्ष के थे तो इनकी माता रामप्यारी देवी का देहांत हो गया। उन्होंने अपने ननिहाल में रहकर प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की पढ़ाई पूरी की। कानपुर में सनातन धर्म कॉलेज से बी.ए. किया। आगरा के सेंट जॉन कालेज से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. करने के दौरान वे नाना जी देशमुख के सम्पर्क में आए। बीमार ममेरी बहन की सेवा करने के कारण पंडित दीनदयाल एम.ए. वितीय वर्ष की पढ़ाई पूरी नहीं कर सके। पंडित दीनदयाल समाज के लिए कुछ अलग करना चाहते थे अतः नौकरी का विचार त्याग कर समाज सेवा का स्वप्न लिए भाऊराव देवरस के पास गए और स्वयं को आजीवन समाज सेवा के प्रति समर्पित कर दिया।

एक निर्भीक पत्रकार, प्रखर लेखक, गहन अध्येता के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के योगदान को सदैव याद किया जाएगा। सन् 1947 ई० श्री भाऊराव देवरस की प्रेरणा से उन्होंने 'राष्ट्रधर्म' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। फिर 'पांचजन्य' और दैनिक 'स्वदेश' का प्रकाशन सुरू किया। फिर उन्होंने प्रसिद्ध उपन्यास 'सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य' और 'जगत गुरु शंकराचार्य' लिखा। 'अखण्ड भारत क्यों' उनकी प्रमुख कृति है।

उनका मानना था कि समाज में छुआछूत और भेदभाव राष्ट्र की एकता के लिए घातक है। वे स्वदेशी के पक्षधर थे। एक बार उन्होंने कहा था- "विश्व का ज्ञान और आज तक की संपूर्ण परंपरा के आधार पर हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे, जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी अधिक गौरवशाली होगा।" हम सभी को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे तेजस्वी, तपस्वी एवं यशस्वी महापुरुष के सपनों के भारत का निर्माण करने का संकल्प लेना चाहिए।

https://www.evidyarthi.in/